मनोविज्ञान के साथ मानव संचेतना
और संस्कार पक्ष का अध्ययन।

1) अस्तित्व, अस्तित्व ही सहअस्तित्व, सहअस्तित्व में परमाणु में
विकास, परमाणु में विकास क्रम में जीवन घटना, ~~जीवन घटना~~
और चैतन्य पद, जीवन में अक्षय बल और ~~अक्षय~~
शक्ति संपन्नता, जीवन में गुणात्मक विकास,
गुणात्मक विकास क्रम में जीवन जागृति, ~~और~~
भौतिक रासायनिक रचना, उसके स्थिति गति, महत्व,
बल क्रिया समुच्चय का उदय। मनुष्य ही होना प्रमाणित
होता है। ~~जिससे~~ जिससे ही

2) अस्तित्व में प्रत्येक इकाई अपने त्व सहित
व्यवस्था है ~~न~~ जैसा लोहत्व स्वर्णत्व बिल्वत्व
दूर्वत्व अश्वत्व गायत्व के रूप उन प्रजातियाँ
व्यवस्था के रूप में सार्वभौम है। उसी क्रम में मानव
मानवत्व के रूप में ही व्यवस्था और इसका सार्व
भौमता है। व्यवस्था का तात्पर्य वर्तमान में विश्वास
उसका निरंतरता है। वर्तमान में विश्वास
का तात्पर्य स्वभाव गति ~~है~~ है। स अस्तित्व
प्रत्येक इकाई का विकास गुणात्मक विकास
पूर्णता उसकी निरंतरता आचरण केवल उसके
स्वभाव गति ही प्रकृति ~~नियम~~ व सहज प्रमाण है।

3) अस्तित्व में मानव संचेतना ही ज्ञान और सम्पूर्णता ~~व्यापक अनंत~~
~~ज~~ जानने व मानने की क्षमता संपन्न
मानव का स्वभाव गति स्वयं प्रति विश्वास
श्रेष्ठता के प्रति सम्मान व्यवहार में सामाजिकता
व्यवसाय में स्वावलम्बी के रूप में प्रमाणित है
अर्थात मानव तथा नैसर्गिक सम्बन्धों का
पहचान व मूल्यों का निर्वाह के रूप में प्रमाणित
अर्थात आवश्यकता से अधिक उत्पादन का

× जीवन जागृति [illegible]

1) मानव संचेतना में एक और संपूर्णता का पहिचान क्षमता ~~[illegible]~~ का वर्तमान, शरीर स्वास्थ्य के अनुसार कर्माभ्यास [अवसरवादिता से अतिरेक] सहित उत्पादन करने व्यवहाराभ्यास पूर्वक मूल्य मूलक प्रवर्तन सहित शिष्टता को ~~[illegible]~~ आचरित करने का सत्य अध्ययन सुलभ और प्रमाणित होता है।

"मनुष्य भी अपने त्व सहित व्यवस्था है"

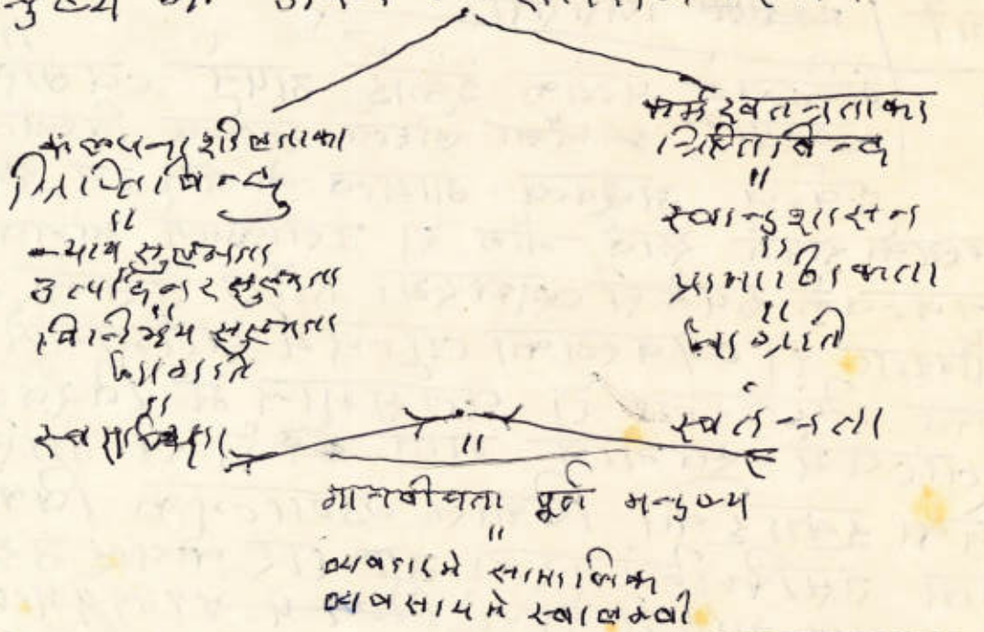

कल्पनाशीलता का प्रतिबिम्ब
॥
न्याय सुलभता
उत्पादन सुलभता
॥
विनिमय सुलभता
[illegible]
॥
~~समृद्धि~~

कर्म स्वतंत्रता का प्रतिबिम्ब
॥
स्वानुशासन
॥
प्रामाणिकता
॥
[illegible]
स्वतंत्रता

॥
मानवीयता पूर्ण मनुष्य
॥
व्यवहार में सामाजिक
व्यवसाय में स्वावलम्बी

---

2 मनुष्य अपने में त्व सहित व्यवस्था होना इनके बौद्धिक समाधान व भौतिक समृद्धि से समग्र व्यवस्था भागीदार होना स्वानुशासन स्वतंत्रता प्रामाणिकता से प्रमाणित होता है फलतः प्रत्येक मनुष्य को अध्ययनात्मक विकास क्रम में समाधान शील पूर्ण और उसके ~~[illegible]~~ निरंतरता के रूप में पहिचानने व निर्वाह करने स्थिति स्वरूप सिद्ध होता है।

शिक्षा की आवश्यकता - मानव संस्कार पूर्वक ...

(1) — शिक्षा विद्यालय में अभिभावक के अभिप्राय व अभिभावक का विश्वास और अध्यापक का [भागीदारी]

(2) — वर्तमान शिक्षा का प्रभाव : - अभिभावक के अध्यापक [विद्यार्थी का परस्पर]

~~मानवीय शिक्षा की आवश्यकता~~

3) — शिक्षा समृद्धि के लिये किये गये प्रयास

4) — मानवीय शिक्षा की अनिवार्यता।

मानव संचेतना ही अखण्ड राष्ट्रीयता का आधार।

वर्तमान परिस्थिति अखण्ड राष्ट्रीयता का पुकार।

— सार्वभौमता

5) मानव संचेतना में ही वर्ग जाति मत पंथ संप्रदाय का समाप्त होता है।

6) मनुष्य मूलतः संवेदन व संज्ञानशील है फलतः मनुष्य हर समस्या से समाधान के ओर प्रसवशील

7) मानव का स्वाभाविक सार्वभौम आकांक्षा व लक्ष्य ही सार्वभौम शिक्षा व अखण्ड राष्ट्रीयता का आधार है

8) मानवीयता ही मानव का स्वत्व होना

मानवीयता ही सार्वभौम सामाजिकता है

सार्वभौम सामाजिकता ही अखण्ड राष्ट्रीयता है।

9) सार्वभौमता का बाधक चेतना औरतन्मूलक व्यवहार में (वर्ग संप्रदाय)

10) वर्ग मूलक चेतना के लिये दार्शनिक आधार

11) मानवीय शिक्षा के मूल में सह अस्तित्ववादी विश्व दृष्टिकोण

12) मानवीयता ही अनुभूति संप्रभुता है उसका निरंतरता ही प्रभुसत्ता है।

मानवीयता को सुरक्षित करना ही प्रभुसत्ता है।

13) मानवीय चेतना पूर्वक न्याय प्रदायी क्षमता है।

14) न्याय प्रदायी क्षमता ही सम्पूर्ण आयाम दिशा क्रम व पांचों स्थिति योग्य स्थिति का होना पाया जाता है।

15) प्रत्येक विद्यार्थी अभिभावक व शिक्षा अपने में प्रामाणिकता का कसौटी केवल जाना हुआ को मानने और माना हुआ को जानने ~~...~~ व्यवस्था में है।

16) राष्ट्रीय संकल्प ही समाज का संकल्प, प्रकट होता है।

17) अपने साथ स्वत्व अहमता का प्रकाशन का इतिहास उसे सम्मान में परिवर्तित करने योग्य संस्कार

18) ~~...~~ राष्ट्रीय अखण्डता के अर्थ में प्रत्येक विवेक के साथ मौलिक तत्वों का समावेश - तदनुरूप पद्धति नीति ~~...~~ और व्यवहारिक ~~...~~ रूप, शिक्षा की स्वायत्तता उसकी निरंतरता अखण्ड राष्ट्रीयता के अर्थ में ~~...~~ नियम के अर्थ में ~~...~~ आपूर्ति

मानवीय अमानवीय अतिमानवीय मण्डलों का विस्तार व रक्षा।

आचार व चरित्र में वैविध्यता (शिक्षक विद्यार्थी अभिभावक) ही शिक्षा संस्कार का विखण्डन है। फलतः भय इसका सत्य है